अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी

वैदिक वाङ्मय के विविध आयाम एवं प्रासंगिकता

(14–15 मार्च, 2022)

प्रतिवेदन

उद्घाटन सत्र

दिनांक 14.03.2022, सोमवार, समय – प्रातः 10:00 – 12:00 बजे, विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय सभागार में आयोजित अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति ने कहा कि भारतीय संस्कृति एवं वेदों का भारतीय जनजीवन में अप्रतिम अवदान है। मानवजीवन के आचार एवं विचार वेदों एवं उपनिषदों से लिए गये हैं। प्रत्येक व्यक्ति को वेदों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, पूर्व कुलपति, केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होने कहा कि वेदों के उपदेश सार्वयुगीन, सार्वजनीन एवं सार्वकालिक है। इनकी सभी शाखाओं, सभी संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यकों एवं उपनिषदों का अध्ययन निरपेक्ष भाव से करना चाहिए। भारतीय मनीषा का सम्पूर्ण विश्व में जो आदरपूर्ण स्थान है वह वेदों के कारण है। मैक्समूलर का वेदों के प्रचार में महत्त्वपूर्ण अवदान है। प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र, आचार्य, दर्शन एवं धम विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं सदस्य सचिव भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, दिल्ली ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि सभी दर्शनों एवं उसकी विभिन्न शाखाओं का मूल उत्स वेद हैं। साङ्रव्य, न्याय आदि दर्शनों का विवेचन करते हुए इनके विकास में वेदों के अवदान को रेखांकित किया जाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि श्री संतोष सोहगौरा, कुलसचिव तथा भाषाअध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. भवतोष इन्द्र गुरु ने वैदिक वाङ्मय के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उज्जैन से आये डॉ. अनूप कुमार मिश्र ने महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) की अनेक साहित्यिक गतिविधियों के बारे में जानकारी दी और कहा कि यह आयोजन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय पर केन्द्रित है। निश्चय ही वैदिक वाङ्मय के संदर्भ में गहन और व्यापक चिन्तन–मनन होगा। उद्घाटन के आरम्भ में संस्कृत के छात्रों द्वारा वैदिक मंगलाचरण और अतिथियों का सम्मान हुआ। स्वागत उद्बोधन संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी के संयोजक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने दिया।

इस अवसर पर शोध पत्रिका सागरिका, डॉ. संजय कुमार की पुस्तक 'रामजी उपाध्याय' , डॉ. बालकृष्ण शर्मा की पुस्तक 'ध्वनिप्रकाशे मुक्तकविमर्शः' का विमोचन हुआ। अतिथियों का स्मृतिचिन्ह, माल्यार्पण, शॉल, श्रीफल से स्वागत किया गया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी का सम्मानपत्र से सम्मान किया गया।

विचार संस्था, सागर (म.प्र.) के संस्थापक कपिल मलैया द्वारा प्रदान किये गये उपघर स्वरूप गौ–उत्पाद से निर्मित वस्तुएँ अतिथियों को भेंट की गई। डॉ. इला घोष व डॉ. वन्दना गुप्ता ने भी अपनी पुस्तकें भेंट की। राष्ट्रपति पुरुस्कार से सम्मानित शिक्षक ललितपुर (उ.प्र.) के प्रसिद्ध वैध श्री रुपनारायण निरंजन के द्वारा उपलब्ध कराये गये औषधीय एवं सुगन्धित चन्दन के द्वारा

Scanned with CamScanner

सभागार में उपस्थित अतिथियों एवं समस्त उपस्थित महानुभावों के माथे पर लेप लगाया गया। इस सत्र का संचालन डॉ. नौनिहाल गौतम एवं आभार डॉ. किरण आर्या ने किया।

प्रथम विचार सत्र

दिनांक 14.03.2022, सोमवार, अपराह्ण 02:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय सभागार में प्रो. गिरीशचन्द्र पन्त की अध्यक्षता में डॉ. अमलधारी सिंह ने 'ऋग्वेदीय शाखाएं खिलमन्त्र का वैशिष्ट्य', डॉ. अरुण कुमार मिश्र ने 'वैदिक शिक्षा पद्धति', डॉ. सत्येन्द्र कुमार यादव ने 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वेदकालीन भौतिक विज्ञान', डॉ. संजय कुमार ने 'वैदिक वाङ्मय मे मन्त्र चिकित्सा' विषय पर शोधलेख पढ़ा। प्रो. गिरीशचन्द्र पन्त ने 'वेदों में मनोविज्ञान' विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। इस सत्र का संचालन डॉ. संजय कुमार एवं आभार डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया।

द्वितीय समानांतर विचार सत्र

दिनांक 14.03.2022, सोमवार, मध्याह्न 12:30 – अपराह्ण 02:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय सभागार में डॉ. इला घोष की अध्यक्षता में डॉ. किरण आर्या ने वेदसंज्ञाविचारः, डॉ. रामहेत गौतम ने 'समाज–संतापं हर्तुः वेदाः' विषय पर शोधपत्र वाचन किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ प्रो. इला घोष ने 'वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रिय भावना' विषय पर अपने विचार रखं। इस सत्र का संचालन डॉ. किरण आर्या एवं आभार डॉ. रामहेत गौतम ने किया।

तृतीय समानांतर विचार सत्र

दिनांक 14.03.2022, सोमवार, मध्याह्न 12:30 – अपराह्ण 02:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय अध्ययन कक्ष–2 में डॉ. पूर्णचन्द्र उपाध्याय की अध्यक्षता में डॉ. वैदिक बाबूलाल द्विवेदी और डॉ. प्रमोद द्विवेदी ने 'वेदों में ब्रह्म निरुपण' पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. पूर्णचन्द्र उपाध्याय ने अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ ही 'अथर्व वेदः आयुर्वेदश्चः' विषय पर व्याख्यान दिया। इस सत्र का संचालन डॉ. प्रदीप दुबे एवं आभार श्री विकास कुमार पाठक ने किया।

चतुर्थ समानांतर सत्र विचार सत्र (PPT)

दिनांक 14.03.2022, सोमवार, मध्याह्न 12:30 – अपराह्ण 02:00 बजे, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी सभागार में डॉ. ओमप्रकाश शास्त्री की अध्यक्षता में प्रो. सीतांशु भूषण पण्डा ने 'वेदे यज्ञस्वरूपम्' पर, डॉ. उमाशंकर त्रिपाठी ने 'वैदिक वाङ्मय में स्वस्थ एवं सुखी जीवन के स्वर्णिमसूत्र' पर, डॉ. सुकदेव वाजपेयी ने 'वेदेषु वनस्पति विज्ञानम्' पर, पं. श्री बाबूलाल द्विवेदी ने 'वेदों की व्यापकता' पर अपना आलेख पढ़ा। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. ओमप्रकाश शास्त्री ने 'वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रीय भावना' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। इस सत्र का संचालन डॉ. ऋषभ भारद्वाज एवं आभार श्री आकाश दुबे ने किया।

Scanned with CamScanner

पंचम विद्वत् सत्र

दिनांक 14.03.2022, सोमवार, अपराह्ण 03:00 – 05:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय सभागार में प्रो. सुद्युम्न आचार्य की अध्यक्षता में डॉ. उदय प्रताप भारती ने 'अथर्ववेद में आयुर्वेद', डॉ. कृष्ण मोहन पाण्डेय ने 'वैदिक ऋषि चिन्तन', डॉ. चक्रधर मेहर ने 'स्वास्थ्य औषधय वेदेषु', डॉ. मदनमोहन तिवारी ने 'वैदिक वाङ्मय में शिक्षा एवं शिक्षा पद्धति' विषय पर आलेख वाचन किया। अध्यक्षता करते हुए प्रो. सुद्युम्न आचार्य ने 'वैदिक वाङ्मय में अक्षर विज्ञान' पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। इस सत्र का संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह एवं आभार श्री डॉ. ऋषभ भारद्वाज ने किया।

सांस्कृतिक संध्या एवं संस्कृत कवि समवाय

दिनांक 14.03.2022, सोमवार, 05:30 – रात्रि 08:30 बजे, राजमाता विजयराजे सिंधिया स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित हुआ। दो दिवसीय इस संगोष्ठी के प्रथम दिवस **सांस्कृतिक संध्या एवं संस्कृत कवि समवाय** का आयोजन स्वर्ण जंयती सभागार में हुआ। जिसमें ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र/छात्राओं ने **डॉ. राकेश सोनी** के निर्देशन में **बुंदेली नृत्य बधाई** के साथ **पार्थ घोष** व **यशगोपाल श्रीवास्तव** व उनके साथियों के द्वारा प्रस्तुत प्रहसन "द शू" देखकर दर्शक प्रभावित हुए। **"ऐ कन्हैया याद है कुछ भी हमारी, कहूँ क्या तेरे भूलने की बारी कबाली"** की बेजोड़ प्रस्तुति ने उपस्थित सभीजन का मन मोह लिया। निहारिका ठाकुर प्रस्तुत **गणेश वन्दना** व प्रियांशी का **तांडव नृत्य** देखकर सभी मंत्रमुग्ध हुए।

कवि समवाय के अन्तर्गत **आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी** की अध्यक्षता में बालकृष्ण शर्मा, सी.एच.नागराजू, कृष्णमोहन पाण्डेय, रामहेत गौतम, पूर्णचन्द्र उपाध्याय, सुकदेव वाजपेयी तथा आचार्य त्रिपाठी ने अपनी स्वरचित संस्कृत कविताओं का पाठ किया। मंच संचालन डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया और आभार डॉ. संजय कुमार ने किया।

षष्ठ विद्वत सत्र

दिनांक – 15.03.2022 मंगलवार, प्रातः 09:30– मध्याह्न 12:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय सभागार में आयोजित विद्वत् सत्र की अध्यक्षता प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी ने की। मुख्य वक्ता प्रो. रामहित त्रिपाठी ने 'वैदिक वाङ्मय में कर्मकाण्ड और उसकी प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. बालकृष्ण शर्मा ने 'वैदिक वाङ्मय के विविध आयाम एवं प्रासंगिकता' पर, डॉ. सूर्यनारायण गौतम ने 'वैदिक संस्कृति के संदर्भ में धण्टानाद का विकास' पर, डॉ. प्रदीप कुमार पाण्डेय ने 'वेदेषु सृष्टि विज्ञानम्' पर अपना शोधपत्र वाचन किया। मंच संचालन डॉ. किरण आर्या ने किया और आभार डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया।

सप्तम सत्र – विचार सत्र

दिनांक – 15.03.2022 मंगलवार, मध्याह्न 12:30– अपराह्ण 02:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय सभागार में प्रो. हरीश्वर दीक्षित की अध्यक्षता में डॉ. सितांशु पण्डा ने वेदे यज्ञादिस्वरूपम् पर, डॉ. सी.एच. नागराजू ने 'सा प्रथमा संस्कृतिविश्वारा' पर,

Scanned with CamScanner

डॉ. राजकुमार मिश्र ने 'वैदिक वाङ्मये मानवमूल्यानि' पर, डॉ. शैलेन्दु शेखर वशिष्ठ ने 'गोपथ ब्राह्मण में सृष्टि विचार' पर आलेख पढ़ा। अध्यक्षीय उदबोधन के साथ ही प्रो. हरीश्वर दीक्षित ने 'वैदिक वाङ्मय में आयुर्वेद' पर अपने विचार रखे। मंच संचालन डॉ. रामहेत गौतम ने किया और आभार डॉ. किरण आर्या ने व्यक्त किया।

अष्टम समानांतर विचार सत्र

दिनांक – 15.03.2022 मंगलवार, मध्याह्न 12:30 – अपराह्ण 02:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय अध्ययन कक्ष–1 में प्रो. शीतला प्रसाद पाण्डेय की अध्यक्षता में डॉ. संजय कुमार ने 'वैदिक वाङ्मय में मन्त्र चिकित्सा' पर डॉ. ऋषभ भारद्वाज ने 'अथर्ववेद में वर्णित वनस्पतियों का चिकित्सीय विश्लेषण' पर, पी आर मलैया ने 'वैदिक सामाजिक व्यवस्था' पर, टीकाराम त्रिपाठी ने 'वैदिक वाङ्मय में शिव संकल्प सूक्त और सौमनसस्यसूक्तों के अवदान की प्रासंगिकता और सार्थकता' विषय पर आलेख पढ़ा। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ प्रो. शीतला प्रसाद पाण्डेय ने 'निगमागमीय विमर्श' पर अपना व्याख्यान दिया। मंच संचालन डॉ. संजय कुमार ने किया और आभार डॉ. ऋषभ भारद्वाज ने व्यक्त किया।

नवम विचार सत्र

दिनांक – 15.03.2022 मंगलवार, अपराह्ण 12:30– 02:00 बजे, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी सभागार में डॉ. बालकृष्ण शर्मा की अध्यक्षता में डॉ. नानिहाल गौतम ने 'वैदिक वाङ्मय में ऋषि व कृषि' पर, डॉ. शशिकुमार सिंह ने 'वेदोऽखिलः काव्यमूलम्' पर, डॉ. रामरतन पाण्डेय ने 'वैदिकीय संस्कृति' पर अपने आलेख पढ़े। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. बालकृष्ण शर्मा ने 'वैदिक वाङ्मय के कुछ महत्वपूर्ण संदर्भो' पर अपने विचार व्यक्त कियें। मंच संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया और आभार श्री आकाश दुबे ने व्यक्त किया।

समापन सत्र

दिनांक – 15.03.2022 मंगलवार, सायं 03:00 बजे, जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय सभागार में प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी की अध्यक्षता और प्रो. विजय कुमार सी जे, कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) के मुख्यातिथ्य और विशिष्ट अतिथि डॉ. अमलधारी सिंह के महत्वपूर्ण विचारों के साथ संगोष्ठी का समापन हुआ।

वैदिक जीवन शैली जीवन की पूर्णता के लिए अनुकरणीय है। इस वैदिक पक्ष को भी समाज के सामने लाया जाना चाहिए। वैदिक ज्ञान को वैज्ञानिक रीति से समझ कर जीवन में उतारा जाना अध्ययन का मूल प्रयोजन है। जो ग्रन्थ कण्ठस्थीकरण द्वारा व्यक्ति में विद्यमान रहता है, वह अपना अर्थ भी खोलता है। भारत देश में वर्तमान में भी ऐसे मनीषी हैं, जो ऋग्वेद के सम्पूर्ण मन्त्रों को कण्ठस्थ कर धनपाठ करने में समर्थ हैं। ऐसी संगोष्ठियाँ लोंगो को समिति दायरे से असीम की ओर ले जाती हैं। जयशंकर प्रसाद जैसे हिन्दी के कवियों का मर्म समझने के लिए वेद का ज्ञान अपक्षित है। ज्ञान की शाश्वत, सनातन व असीम धारा है। यह

Scanned with CamScanner

विचार **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी** ने महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) के सहयोग से संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) द्वारा जवाहरलाल नेहरू सभागार में वैदिक वाङ्मय क विविध आयाम एवं प्रासंगिकता विषय पर आयोजित अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहीं। उन्होने यह भी कहा कि ज्ञान की सनातन अव्याहत धारा ही वेद है। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जैसे विद्वान जिन्होंने वैदिक जीवनशैली को जिया, वे अनुकरणीय है। मुख्य अतिथि महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति **प्रो. विजय कुमार सी जे** ने कहा विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में वेदों के उच्चारण और पाठ मात्र तक सीमित न होकर शोधपरक अध्ययन भी वर्तमान समय की अपेक्षा है। वैज्ञानिक संस्थानों IIT आदि में संस्कृत पाठ्यक्रम चल रहे है। IIM जैसे व्यावसायिक संस्थानों में भी संस्कृत का अध्यापन चल रहा है। 'साइंटिफिक लिटरेचर इन संस्कृत' जैसी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। सभी विद्याओं में परस्पर सम्बन्ध है। इसलिए अन्तरानुशासनिक विषयों का प्रवर्तन हो रहा है। संस्कृत में सभी ज्ञान विद्यमान हैं, उन्हें खँगालकर वर्तमान वर्तमान से जोड़ने की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि **प्रो. अमलधारी सिंह,** वाराणसी ने वैदिक वाङ्मय के महत्त्व और आज के समय में उसकी सार्थकता पर अपने विचार कियें। उन्होंने संगोष्ठी में आयें सभी विद्वानों, संस्कृत विभाग के कर्मचारियों एवं छायाकारों का काशी से ले आये शाल के द्वारा समानित किया। स्वागत उद्‌बोधन संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी संयोजक **प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी** ने दिया। **संचालन डॉ. शाशिकुमार सिंह** ने किया। और **आभार ज्ञापन डॉ. रामहेत गौतम** ने किया।

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
Head, Dept. of Sanskrit
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
Dr.Hari Singh Gour V. V. Sagar

Scanned with CamScanner